

पद ९५

(राग: पूर्वी - ताल: दीपचंदी)

ब्रह्म रे जीवा ब्रह्म रे। तूंचि ब्रह्म म्हणुनि बोलती श्रुति रे॥ध्रु॥
शब्द ज्ञान हे नेत्रासि नाहीं। रूप जाणणें श्रोत्रासि नाहीं। शब्द
रूप यांसि साक्षित्व नाहीं। तूंचि साक्षी अन्य साक्षी तो नाहीं॥१॥
स्वप्न भोग हा जागृति नाहीं। जागृति सुख दुःख स्वप्निंही नाहीं।
जागृति स्वप्न सुषुप्तीत पाही। तूंचि साक्षी अन्य साक्षी तो
नाहीं॥२॥ नाद धर्म तो बिंदूसि नाहीं। बिंदु धर्म ते नादासि नाहीं।
बिंदु कला नादीं जाणणें नाहीं। तूंचि साक्षी अन्य साक्षी तो
नाहीं॥३॥ देव निजात्मा भक्त तो पाही। भक्तात्मा हा देवचि पाही।
देवाभक्ता मुळीं भेद तो नाहीं। चिन्माणिक हा मार्ताण्ड पाहीं।
तूंचि साक्षी अन्य साक्षी तो नाहीं॥४॥